

## चिन्ता दूर करने का साधन

आराजीग्राम में श्रीभक्तकोकिलजी के बहुत से भक्त थे । यह वही ग्राम है जिसमें रहने वाला पटवारी पहले पहल सद्-गुरु के पास जाते समय श्रीस्वामीजी को गोंसपुर में मिला था और हमेशा के लिए भक्त हो गया था । यहाँ के भक्त श्रीस्वामीजी को बार-बार अपने गांव ले आते । सत्संग महोत्सव होता, रात-रात भर संकीर्तन होता । गांव के सरपंच भी श्रीस्वामीजी से बहुत प्रेम करते थे । एक दिन उन्होंने पूछा कि-किस बात से चित की चिन्ता दूर हो ? श्रीस्वामीजी ने कहा--‘डेरा गाज़ीखाँ के मालिक सराई गाज़ीखाँ ने अपने वज़ीर गामणखाँ से जो गामू सच्चार के नाम से मशहूर था पूछा-‘दिल का गम कैसे देर हो ?’ गामू सच्चार ने कहा-‘सरकार पहले आप ही फरमाइये ।’ गाज़ीखाँ बोला-‘शराबो खाने आबो माहलैलो किमरिरु यार ।’ चांदनी रात हो, नदी का तट हो, सुरा हो और सुन्दरी । फिर दिल में गम का क्या काम ? गामू सच्चार ने कहा- इनमें से एक भी चीज़ मुश्तकिल रहने वाली नहीं है । इनसे अगर गम दूर भी हो तो आंख झपटे-न-झपटे फिर आ जायेगा । अगर हमेशा के लिये गम दूर करना है तो यह चार बातें हैं--

“सोहबते साहिब दिलाँ सखावत तोबहाँ इश्तेगुफार”

साहिब दिल फकीरों की सोहबत, उदारता, ईश्वर के सामने तोबा करना और बन्दगी-यह चार बातें हमेशा के लिये गम को मिटा देती हैं ।